रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –6 ● कानपुर 16 से 31 मार्च 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

काम करते हुए नई सरकार से करें अपेक्षा

प्रदेश का राजनैतिक वातावरण अब सामान्य है चुनावी शोर के बाद नई सरकार के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। गज़ट का यह अंक जब आपके हाथ में होगा तो सम्भवतः सरकार गठन का काम या तो पूरा हो चुका होगा या पूरा हो रहा होगा। पाँच सालों के बाद नई सरकार अपने नये एजेण्डे के साथ शपथ लेगी और जब नई सरकार आती है तो पूरा सरकारी तन्त्र बदल जाता है। वर्षों से एक ही सीट पर जमे बैठे अधिकारी इधर से उधर हो जाते हैं और जो परिवर्तित अधिकारी सीट पर आते हैं उनकी मनोदशा भी बदली हुई होती है और इस बदली मानसिकता में काम करने का अंदाज़ भी बदला हुआ होता है।

हर सरकार की अपनी प्राथमिकतायें होती हैं, कोई भी सरकार बने परन्तु चिकित्सा व स्वास्थ्य दो ऐसे विषय हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है उत्तर प्रदेश के सटे हुए राज्यों में स्वास्थ्य को विशेष स्थान दिया जा रहा है धीरे–धीरे तमाम राज्य सरकारें वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को भी सम्मानजनक स्थान प्रदान करने में लगी हैं। उत्तर प्रदेश राज्य में वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों की तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कार्य करने का अधिकार प्राप्त है और इसी अधिकार के आधार पर पूरे प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथ विधि सम्मत ढंग से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे हैं।

इस चिकित्सा पद्धति को नियमित करने के लिए पिछली सरकार से बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने सम्पर्क साधा व पत्र व्यवहार करके नियमितीकरण की मांग की नियमितीकरण के साथ–साथ बोर्ड ने यह भी मांग की थी कि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से प्रशिक्षित व पंजीकृत इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं में उचित स्थान दिया जाये इस विषय पर कुछ कार्य भी हुआ था परन्तु सफलता नहीं मिल पायी अब नई सरकार के सामने हम पुनः उपस्थित होंगे और विभागीय अधिकारियों को अपने से सम्बन्धित जानकारियां उपलब्ध करायेंगे और यह पूरा प्रयास होगा कि पूर्व में दिये गये प्रतिवेदन पर ही कोई नीति निर्धारित की जाये। नीति का निर्धारण बहुत आवश्यक है क्योंकि नियमतः प्रदेश में चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए अपने विभागीय अधिकारी के यहाँ पंजीयन कराना आवश्यक है जैसा कि हम कई बार लिख चुके हैं कि बदले हुए नियम के अनुसार एलोपैथी के लिए मुख्य चिकित्सा चिकारी, आयुर्वेद एवं यूनानी के लिए क्षेत्रीय आयुर्वेदिक अधिकारी होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए ज़िला होम्योपैथिक अधिकारी अधिकृत हैं।

- ✓ नई सरकार से होती हैं अपेक्षायें
- ✓ काम करके दिखायेंगे दम
- ✓ वर्तमान सरकार से ज़्यादा अपेक्षा
- ✓ नया सत्र नया कलेवर
- ✓ चिकित्सा कार्य पर ज़्यादा ध्यान
- ✓ सामान्य व गम्भीर दोनों का इलाज
- ✓ संक्रामक रोगों पर मिले अवसर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी ही एक मात्र ऐसी चिकित्सा पद्धति बचती है जिसके लिए कोई स्पष्ट दिशा निर्देश नहीं है, स्पष्ट दिशा निर्देश न होने के कारण ज़िले का सबसे बड़ा स्वास्थ्य विभाग का अधिकारी मुख्य चिकित्सा अधिकारी होता है हमारे चिकित्सक अपने पंजीयन का आवेदन मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में करने को विवश हैं मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय के कुछ कर्मचारी कभी कभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के आवेदन लेने में आनाकानी करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप एक अजीब सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। फलतः चिकित्सक परेशान हो जाता है और पूरे मनोयोग से चिकित्सा व्यवसाय नहीं कर पाता है। यह सत्य है कि आधे मन से किया गया कार्य कभी भी अपना सौ प्रतिशत नहीं दे सकता, अस्तु इस समस्या का समाधान अति आवश्यक है।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इस विषय पर गम्भीर है इसलिए नई सरकार के गठित होते ही इस समस्या के निदान के लिए विभागीय अधिकारियों से चर्चा की जायेगी परन्तु जितनी ज़िम्मेदारी बोर्ड की है उससे कम ज़िम्मेदारी चिकित्सकों की नहीं है। हर चिकित्सक को चाहिये कि वह अपनी ही विधा में चिकित्सा व्यवसाय करे क्लीनिक के बाहर लगे बोर्ड पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी क्लीनिक शब्द का स्पष्ट उल्लेख करे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां ही व्यवहार में लायें इसके साथ साथ जिस रोगी की चिकित्सा की हो उसका पूरा विवरण चिकित्सक के पास होना चाहिये जिससे कि जब कभी आवश्यकता पड़े तो चिकित्सक अपना रिकार्ड प्रस्तुत कर सके, रिकार्ड रखने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि चिकित्सक को यह ज्ञात रहता है कि उसने किस रोगी का कब से कब तक इलाज किया और चिकित्सा के दौरान कौन कौन सी औषधियां प्रयोग में लाया, उन औषधियों का क्या प्रभाव हुआ, रोगी रोगमुक्त हुआ या नहीं ! रोगमुक्त नहीं हुआ तो क्यों नहीं हुआ ?क्या रोगी ने बीच में ही चिकित्सा बन्द कर दी या फिर औषधियों से उसे लाभ नहीं हुआ ! यह सारे विवरण सरकार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की गुणवत्ता सिद्ध करने का आधार बनते हैं।

किसी भी चिकित्सा पद्धति को सरकार द्वारा मान्यता या नियमित तभी किया जाता है जब सरकार इस बात के लिए आश्वस्त हो जाती है कि जिस चिकित्सा पद्धति को सरकार द्वारा नियमित किया जायेगा वह चिकित्सा प्रणाली जनोपयोगी के साथ साथ स्वास्थ्य के लिए काफी लाभकारी है। शीघ्र ही ग्रीष्म ऋतु आ जायेगी उसके बाद बारिश गर्मी और बारिश के सानिध्य से तरह–तरह की गम्भीर व संक्रामक बीमारियां जन्म लेती हैं, कभी कभी तो स्थिति इतनी विकट हो जाती है कि सरकार को इन बीमारियों को महामारी घोषित करना पड़ता है, ऐसी स्थिति में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक अपनी उपयोगिता सिद्ध कर पाते हैं तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए यह वरदान साबित होगा।

पिछले कुछ वर्ष डेंगू नामक बीमारी ने पूरे देश में अपना प्रभाव डाला और मृत्यु का ऐसा तांडव किया कि हज़ारों रोगी कालकलवित हो गये। लोग–बाग भय के पीछे जिसने जो बताया वह इलाज करने लगे ऐसी स्थिति में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने अपनी उपयोगिता साबित की होती तो आज स्थिति कुछ और होती। जब कोई भी काम बहुत बड़ी संख्या में होता है तो सरकार का ध्यान बरबस उस तरफ जाता ही है। यह सत्य है कि तमाम प्रयासों के उपरान्त ही आज तक किसी भी सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्यों के मूल्यांकन के लिए न तो कोई अधिकरण गठित किया गया है और न ही कोई इकाई यदि ऐसा हो गया होता तो हमारे दावों पर गम्भीरता से विचार होता सरकार यदि विचार करने में हीला–हवाली करती तो हमारे चिकित्सक सरकार पर दबाव बनाते परन्तु जो नहीं हुआ वह नहीं हुआ यदि हम इसी पर पड़े रहेंगे कि जब अधिकरण गठित होगा तब हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी का काम करेंगे ऐसा विचार हमें वर्षों पीछे ले जायेगा। आज प्रतिस्पर्धा का युग है इस युग में यदि हमें अपने आप को ज़िन्दा रखना है तो सिर्फ कार्य के आधार पर ही प्रतिस्पर्धा में बने रहा जा सकता है। आने वाला समय और भी स्पर्धी हो जायेगा क्योंकि हर चिकित्सा पद्धति में नयी–नयी खोजें हो रही हैं अनुसंधान हो रहे हैं यदि हम उनसे आगे नहीं निकल सकते हैं तो कम से कम समकक्ष का दावा तो कर ही सकते हैं और यह सब कार्य पर ही निर्भर है।

बिना ध्यान भंग किये करें कार्य

तत्परता और तन्मयता से किया गया कार्य सदैव फलदायी होता है और अपेक्षित परिणाम भी देता है वहीं आधे अधूरे मन से किया गया कार्य कभी भी अपेक्षित परिणाम नहीं देता। इलेक्ट्रो होम्योपैथी की विडम्बना है कि यहाँ कोई भी काम पूरी तन्मयता से करने ही नहीं दिया जाता है और परिणामों की पूरी अपेक्षा की जाती है। चिकित्सकों का आवाहन किया जाता है कि वह पूरे मनोयोग से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कार्य करें तभी बीच बीच में नित नये शगूफे छोड़कर ध्यान भंग करने का काम भी किया जाता है। ज्यों ज्यों विकास होता है लोगों की समझदारी बढ़ती है कभी कभी यह भी देखा गया है कि ज़्यादा समझदार भी नासमझी के कार्य कर जाते हैं।

जबसे सोशल मीडिया प्रभाव में आया तब से तरह तरह की अच्छी और बुरी जानकारियां लोगों के पास पहुँच जाती हैं। जिस जानकारी का चिकित्सक से सीधे सम्बन्ध नहीं होता है वह जानकारी भी जब उस चिकित्सक तक पहुँच जाती है तो वह चिकित्सक भी अनावश्यक रूप से परेशान होने लगता है। कुछ लोगों की आदत होती है कि वे अधिक से अधिक जानकारी अपने पास एकत्रित करें और फिर उन जानकारियों को अपने हिसाब से विश्लेषित करके समाज में फैलाया जाता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ऐसी जानकारियों का भण्डार है और नेटवर्क भी इतना मज़बूत है कि पूरे देश में फैलने में देर नहीं लगती यह आधी अधूरी जानकारी जहाँ चिकित्सक की मति भ्रमित करती है वहीं समाज पर इसका गलत सन्देश भी जाता है। मार्च के पहले सप्ताह में एक आधा अधूरा मैसेज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है कि भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक आदेश जारी कर सभी संस्थाओं को नोटिस जारी की है कि वे अपने से सम्बन्धित चिकित्सकों की सूची भारत सरकार को प्रेषित करे। यदि ऐसी कोई सूचना है तो इससे डरने की क्या बात है यदि संस्था ने आप को चिकित्सक बनाया है और आपको चिकित्सा व्यवसाय करने का अधिकार प्रदान किया है। तो यह उस संस्था का दायित्व है कि वह यह जानकारी सरकार को उपलब्ध कराये वैसे अभी तक

शेष पेज 3 पर

सार्थक सोच

व्यक्ति की जैसी सोच होती है परिणाम भी वैसे ही होते हैं, यह वाक्य आदिकाल से लेकर आज तक सत्य सिद्ध हो रहा है क्योंकि सोच की हिसाब से व्यक्ति अपने कार्य एवं दिशा तय करता है और उसी के अनुरूप फल पाने की इच्छा रखता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कई तरह की सोच वाले व्यक्ति व संगठन हों, यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि किसी भी आन्दोलन में जुड़े हुए सारे लोगों की सोच एक सी हो यह सम्भव नहीं है, इसका कारण यह है कि हर व्यक्ति का अपना वैचारिक दर्शन होता है और इसी दर्शन के आधार पर उसका दृष्टिकोण बनता है यह एक अलग बात है कि कार्य करने के ढंग प्रथक प्रथक हो सकते हैं परन्तु जब उद्देश्य एक हो तो कहीं न कहीं वैचारिक सामंजस्य बैठालना पड़ता है क्योंकि बिना सामंजस्य के सफ़लता की कल्पना भी व्यर्थ होती है।

इसे हम संयोग ही कहेंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जितने भी व्यक्ति समूह या संगठन लगे हैं सभी का उद्देश्य एक है और सब यही चाहते हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो और इसी सम्मानजनक स्थान की प्राप्ति के लिए अपनी गतिविधियां संचालित करते रहते हैं परन्तु इन गतिविधियों से जो परिणाम आने चाहिये वह नहीं प्राप्त हो पा रहे हैं इससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के मध्य निराशा का भाव धीरे–धीरे जन्म लेने लगता है। निराशा के भाव का जन्म लेना स्वाभाविक भी है क्योंकि जब भी किसी संगठन द्वारा कोई आन्दोलन खड़ा किया जाता है तब उस आन्दोलन की सफ़लता के लिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने का प्रयास किया जाता है और प्रयास को सफल करने के लिए कुछ वादे भी किये जाते हैं परन्तु समय पर समय बीतता जाता है परन्तु वादे किसी भी अंश तक सही सिद्ध नहीं होते हैं जिससे चिकित्सकों का विश्वास टूटता है, आन्दोलनकारी का विश्वास टूटना किसी भी आन्दोलन के लिए दुखद पहलू से कम नहीं होता है।

समय पर समय बीतता जा रहा है परन्तु परिणाम कहीं दूर दूर तक नज़र नहीं आ रहे हैं ! नज़र भी आये कैसे ?चूंकि प्रयास जिस तरह से होना चाहिये वह नहीं हो पा रहे हैं हमारे अधिकांश साथी सफ़लता पाने के लिए जिस तरह के प्रयास कर रहे हैं वह यर्थाथ से कोसों दूर हैं जबकि होना यह चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आज की दशा को देखते हुए आन्दोलन की दिशा निश्चित करनी चाहिये।

यह सर्वविदित है कि कार्य को ज़्यादा दिनों तक दबाया नही जा सकता और वह कार्य जो जनोपयोगी है उसकी भी उपेक्षा बहुत समय तक सम्भव नहीं है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कार्य हुआ है परन्तु उस कार्य को कभी भी प्रचारित नहीं किया गया और जिन भी संस्थाओं या संगठनों ने अपने प्रचार में कार्य को हिस्सेदारी दी है उसका अंश बहुत न्यून है। आज जब पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने की अधिकारिता है तब हमें अपने कार्यों का प्रचार करना ही होगा पिछले दिनों एक पोस्ट पढ़ने को मिला कि कुछ हमारे आन्दोलनकारी गुजरात राज्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित कराने के लिए न्यायालयों की परिक्रमा कर रहे थे परन्तु अब उन्हें परिक्रमा नहीं करनी पड़ेगी क्योंकि पंजाब के एक इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक ने अपने किये हुए कार्यों की पूरी फाइल सौंप दी है। इसमें कितनी सच्चाई है यह तो पोस्ट करने वाले ही जाने हम तो इस बात की अनुसंशा करते हैं कि ऐसे कार्यों को बढ़ावा देना चाहिये तभी हमारे दावे की पुष्टि होगी ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चमत्कारी चिकित्सा पद्धति है व इससे गम्भीर से गम्भीर रोगों पर नियन्त्रण किया जा सकता है, इन दावों की स्वीकारोक्ति समाज में तभी होगी जब हम अपने किये हुए कार्यों को प्रदर्शित करेंगे इससे उन लोगों को भी बल प्राप्त होगा जो सुदूर गावों में बैठकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करते हैं तथा रोगी को लाभ भी प्रदान करते हैं परन्तु अपनी सफ़लता प्रदर्शित नहीं कर पाते हैं इसलिए इस परम्परा को हमें आगे बढ़ाना है यदि आज एक चिकित्सक आगे बढ़कर हिम्मत दिखाते हुए अपने कार्यों को सार्वजनिक करता है तो निश्चित रूप से ऐसा कार्य करने में हमारे अन्य साथी भी हिचकिचाहट नहीं दिखायेंगे और जिस सफ़लता के लिए हम परेशान हैं वह प्राप्त होगी।

गर्मी में गर्मी लाने की तैयारी

भारत वर्ष एक ऐसा देश है जहां के निवासियों को हर तरह के मौसम का आनन्द प्राप्त होता है, मार्च का महीना बीतते बीतते काफ़ी गर्म वातावरण होता है क्योंकि बसन्त के साथ ही शीत ऋतु का समापन होने लगता है और मार्च और अप्रैल का महीना पूरे देश में परीक्षाओं का वातावरण लाता है बोर्ड स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की परीक्षाओं का आयोजन इसी काल में होता है हर तरफ़ गर्मी रहती है, किसी को परीक्षा की तैयारी की गर्मी, किसी को कम्पिटीशन फ़ाइट करने की गर्मी और इस गर्मी वाले वातावरण में सब कुछ सहजतापूर्वक चलता ही रहता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी का सम्बन्ध गर्मी से है जब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ नया हुआ है तब–तब मौसम गर्म ही रहा है। बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की स्थापना 24 अप्रैल अर्थात गर्म मौसम में हुई भारत सरकार ने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बारे में स्पष्टीकरण 5 मई को जारी किया। भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा चिकित्सा व अनुसंधान करते रहने का आदेश 21 जून को निर्गत किया था इस तरह जो कुछ भी अच्छा होता है उसमें गर्मी का बड़ा महत्व है। यदि हम आन्दोलनों की बात करें तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के अधिकांश आन्दोलन गर्म के मौसम में प्रारम्भ हुए हैं और वातावरण में गर्मी लायें हैं। सम्मेलन और धरनों का आयोजन भी अधिकतर इसी मौसम में होता है, इस परम्परा को शायद हमारे साथी तोड़ना नहीं चाहते हैं और उनका यह प्रयास कि चिकित्सकों के मध्य नई ऊर्जा भरकर गर्मी का संचार किया जाये जिससे कि आन्दोलन को धार दी जा सके। धीरे–धीरे मौसम बदल रहा है और इस बदलते हुए मौसम में लोगों को जोड़ने का प्रयास अपने–अपने ढंग से फिर किया जा रहा है, दो कार्यक्रमों के आयोजित होने की सूचनायें आ रही हैं। एक आयोजन सम्मेलन की शक्ल में बिहार राज्य के बेगुसरायं में आयोजित होना है इस कार्यक्रम को भी राष्ट्रीय स्तर का बताया जा रहा है उसी समय एक राष्ट्रीय धरने का आयोजन देश की राजधानी दिल्ली के जंतर मंतर में आयोजित किया जा रहा है, यह कार्यक्रम भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल को लेकर हो रहा है। बिहार में जो कार्यक्रम है उसकी भी पृष्ठभूमि मान्यता का बिल है दोनों कार्यक्रम ठीक हैं कार्यक्रमों से ही लोगों में चेतना का भाव जागृत होता है लेकिन जो हमारे कार्यक्रम के आयोजक हैं उनको कम से कम एक बार बैठकर तिथियों की निश्चितता पर चर्चा ज़रूर कर लेनी चाहिये थी। कारण यह है कि इन कार्यक्रमों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का चिकित्सक ही जाता है एक ही समय पर या 4–6 दिन के अन्तराल में एक ही तरह के दो कार्यक्रम आयोजित होने से चिकित्सकों के मन में अनिर्णय की स्थिति पैदा होती है कि किस कार्यक्रम में जायें और किस कार्यक्रम में न जायें बिहार का कार्यक्रम भी एक नई ऊर्जा प्रदान कर सकता था यदि विषय पर गम्भीरता से चिन्तन किया गया होता।

वैसे तो आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी सम्मेलनों का एक ढर्रा सा हो गया है जो लोग आयोजकों के सम्पर्क में होते हैं उन्ही का नन्दन, अभिनन्दन और वन्दन होता है जिससे जो नये चिकित्सक पूरे मनोयोग से इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा में लगे होते हैं वह प्रकाश में नहीं आ पाते हैं। हर एक के मन में यह इच्छा होती है कि वह भी सम्मान प्राप्त करे व अपनी बात सबके सामने रखे इससे उत्साह में वृद्धि होती है साथ–साथ आन्दोलन को गति भी मिलती है, पिछले वर्षों में जंतर मंतर में कई धरने आयोजित किये गये चिकित्सक भी जुटे पर यदि कुछ प्रतिशत भी परिणाम आया होता तो चिकित्सकों के मध्य अत्याधिक ऊर्जा का संचार होता, दूसरी बात यह भी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के बिल को लेकर सरकार पर दबाव बनाने के लिए जो यह आन्दोलन किये जा रहे हैं उनपर गम्भीरता से चिन्तन करने की आवश्यकता है। यह विडम्बना है कि आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल की आवश्यकता और बाध्यता के बारे में हमारे साथी समझने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, बिल लाना, बिल प्रस्तुत करवाना, दोनों ही अच्छी बात है परन्तु बिलों के बारे में उनकी वास्तविकता हमें समझनी होगी प्राइवेट मेम्बर बिल का सरकार कितना उपयोग करती है और उसपर सरकार का रवैया क्या रहता है इसपर हमें शान्त मन से चिन्तन करना चाहिये। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बिलों का इतिहास बहुत पूराना है हमारे पूर्ववर्ती साथियों के मन में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता का विचार कौंदता था और उनकी भी इच्छा होती थी कि सरकार अड़ियल रवैया छोड़कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कोई ऐसा रास्ता निकाले जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की मान्यता का मार्ग प्रशस्त हो सके। जहां तक बिल का सम्बन्ध है हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि सरकार द्वारा वर्ष 2005 में न्यु मेडिकल सिस्टम रिकगनीज़न बिल लाया गया था जो कि आज भी उसी स्थिति में पड़ा हुआ है। यदि बिल की ही बात करनी है तो जिन माननीय सांसदों की मदद से बिल लाने का प्रयास कर रहे हैं वह अपने उन्हीं सांसदों से यह प्रार्थना करें कि आदरणीय सांसद जी आप अपने स्तर से यह प्रयास करें कि जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता से सम्बन्धित बिल है उसमें संशोधन कराकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा में परिवर्तन लावें, यह काम हमारे माननीय सांसद लोग कर सकते हैं।

नई बिल पर चर्चा की तुलना में यह मार्ग ज़्यादा सुगम व आसान है नये बिल पर चर्चा हो, सकारात्मक चर्चा हो, फिर हमें सांसदों का समर्थन मिले, सरकार सांसदों की बातों से सहमत हो, चर्चा में हमारे सांसद यह सिद्ध कर पायें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी जनता को स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण लाभ देती है, फिर लोकसभा से राज्य सभा में चर्चा में जाये, वहां भी समर्थन प्राप्त हो, पुनः अन्य कार्यवाहियों के बाद ही मान्यता की राह निकल सकती है। हर प्रयास के दो पहलू होते हैं यह आवश्यक नहीं होता है कि हर प्रयास के सार्थक परिणाम ही निकलें इसलिए किसी भी क्षेत्र पर कार्य करने से पहले हमें उसके नकारात्मक पहलू पर ज़्यादा चिन्तन करना होता है यदि कुछ परिणाम नकारात्मक आवें तो उनकी भरपायी हम कैसे करेंगे? नकारात्मकता के भय से हम कार्य न करें, प्रयास न करें, यह भी उचित नहीं होता है परन्तु कार्य करने के पहले यह विचार कर लेना चाहिये कि इसके परिणाम सकारात्मक कितने होंगे! यदि भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत बिल 2005 में सरकार आंशिक संशोधन करती है और उस बिल को न्यु मेडिकल सिस्टम बिल के स्थान पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बिल के रूप में प्रस्तुत करे तो सफ़लता का प्रतिशत स्वतः बढ़ जाता है।

हमारे साथियों में राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी नही है और राजनैतिक पकड़ भी है परन्तु उसका सही प्रयोग नहीं हो पा रहा है, इतिहास साक्षी है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता की लड़ाई में बहुत सारे

शेष पेज 3 पर

हम कब बदलेंगे ! कब सुधरेंगे ?

वर्तमान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जो स्थिति चल रही है वह संतोषजनक है परन्तु बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती है अब प्रश्न यह होता है कि इस स्थिति में परिवर्तन क्यों नहीं हो रहा है जब कि स्थितियां समय के साथ साथ निरन्तर परिवर्तित हो रही हैं धीरे धीरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज में अपना स्थान भी बनाने लगी हैं परन्तु जिस स्थान की योग्यता यह चिकित्सा पद्धति रखती है उस स्थान को पाना तो दूर छू भी नहीं पा रही है बातें तो बड़ी बड़ी हो रही हैं ऐसा दिखाया भी जा रहा है कि बहुत कार्य हो रहा है जब काम की बात चलती है तो इस चुनाव में नेताओं द्वारा उछाले गये जुमले पर बरबस ध्यान चला ही जाता है एक नेता ने कहा कि काम बोलता है, दूसरे ने कहा कि काम दिखता है, तीसरे ने कहा कि काम नहीं कारनामा दिखता है। यदि हम इन तीनों वाक्यों पर ध्यान दें और इन वाक्यों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन से जोड़ें तो हम पाते हैं कि न तो काम दिख रहा है और न ही काम बोल रहा है, हाँ कारनामें ज़रूर दिख रहे हैं और यह कोई बहुत सुखद स्थिति नहीं है क्योंकि ज्यों ज्यों समय बीतता जायेगा आन्दोलन की राह कठिन होती जायेगी फ़सल पर तो मौसम की मार पड़ती है पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अपनों की मार पड़ती है और वह मार भी ऐसी है जिसकी चोट दिखायी नहीं जा सकती। आन्दोलन एक, उद्देश्य एक पर फ़लसफ़ा अलग अलग स्थिति, कोई किसी की सुनने के लिए तैयार नहीं, जिसके मन में जो आता है वह करने लगता है, अपने किये पर उसे कोई गिला भी नहीं होता है, जबकि स्थितियों को देखते हुए रणनीति बनानी चाहिये और उस रणनीति को सामुहिक न सही कम से कम कुछ लोगों से सहमति भी ले लेनी चाहिये। वैसे तो आम सहमति से किये हुए कार्य में कोई किन्तु परन्तु के लिए कोई स्थान नहीं होता है आज की दशा के लिए हम सारे के सारे उत्तरदायी हैं कोई अगर यह कहे कि हम इससे विलग हैं तो यह समझ से परे है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन की सफ़लता की सबसे बड़ी बाधा है कि परस्पर विश्वास की कमी अविश्वास की हालत यह है कि कोई भी एक दूसरे पर थोड़ा सा भी छोटी छोटी बातों पर भरोसा नहीं करता है जिसका परिणाम यह होता है कि आरोप और प्रत्यारोप का सिलसिला थमने का नाम नही लेता है जब हम परस्पर आपस में ही एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्त से ऊपर नहीं उठेंगे तब तक कोई कल्याण होता नहीं दिख रहा है।

विश्वास के बिना समर्पण नहीं होता और बिना समपर्ण के यथेष्ठ की प्राप्ति नहीं होती है यदि हम आन्दोलनों की बात करें तो आज से कुछ वर्ष पूर्व तक हर आन्दोलन जिसको राष्ट्रीय स्वरूप दिया जाता था उस आन्दोलन में हर राज्य की सहभागिता होती थी घटकों में भले ही बटे हुए हों परन्तु दिलों से एक रहते थे तब आन्दोलन का तरीका ही अलग होता था पिछले दिनों कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं राष्ट्रीय आन्दोलनों में भी प्रान्तीयता की छाप दिखती है यदि हम ध्यान से देखें और विगत 4–5 वर्षों के आन्दोलनों पर दृष्टि डालें तो एक बात साफ़ नज़र आती है कि आन्दोलनों में क्षेत्रीयता के स्पष्ट दर्शन होते हैं और तो और आन्दोलनकारी भी विभाजक रेखा बनाये रहते हैं जिससे कि आन्दोलन सर्वजन के स्थान पर व्यक्तिगत होकर रह जाता है।

आज के आन्दोलन महज़ शक्तिप्रर्दशन का माध्यम बन गये है हमारे नेतागण आन्दोलनों के माध्यम से यह सन्देश देते हैं कि हमारे पास इतने व्यक्ति हैं और हम ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी को उचित सम्मान दिला सकते हैं। यह अहं ही आन्दोलन की सफ़लता में बाधक तत्व है पहले उत्तर प्रदेश राज्य से आन्दोलनों का प्रतिनिधित्व होता था और लगभग सभी राज्यों का प्रतिनिधित्व भी रहता था आज आन्दोलन के कुछ केन्द्र बन गये हैं एक केन्द्र है गुजरात दूसरा केन्द्र है महाराष्ट्र और यही दोनों केन्द्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन को संचालित करने का दावा करते हैं। कोई भी राज्य नेतृत्व करे इससे परहेज नहीं होना चाहिये परन्तु सोच में राष्ट्रीयता होनी चाहिये क्योंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी एक राज्य का विषय नहीं है यह पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों के जीवन मरण का प्रश्न है लाखों की संख्या में जो इलेक्ट्रो होम्योपैथ तैयार हो गये हैं वह आज भी इस आशा में है कि कोई न कोई हमारा कल्याण अवश्य करेगा और इसी प्रतीक्षा में वर्ष दर वर्ष गुज़रते जा रहे हैं और प्रतीक्षा है कि समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही है। जब किसी पुराने इलेक्ट्रो होम्योपैथ से मुलाकात होती है और उससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन पर चर्चा होने लगती है तो दर्द आंखो में छलक आता है और न चाहते हुए भी कुछ कहने को विवश हो जाता है और कहने लगता है कि आस लगाये लगाये आंखे पथरा गयी हैं पता नहीं हमारे सामने कुछ होगा या नहीं! यह उस व्यक्ति के मन की बात थी इसे हम व्यथा की संज्ञा तो नहीं दे सकते क्योंकि यदि व्यथित होता तो आखरी सांस तक जुड़े रहने का दम न भरता नई पीढ़ी चमत्कारों में भरोसा करती है प्रतीक्षा और इंतज़ार जैसे शब्द उसके पास नहीं हैं। जब कभी एकान्त में बैठिये शान्त मन से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के भविष्य की चिन्ता करिये तो जो दृश्य उभरकर नेत्रों के सामने आता है वह उस पल के लिए विचलित कर देता है, हम सोचने पर विवश हो जाते हैं कि क्या होता जा रहा है ? हमारे साथियों को जो नये हैं उनकी बात तो छोड़ दीजिए लेकिन जिनका जीवन इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ही गुज़रा है और इस संध्याकाल में भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े हैं उनके विचारों में भी परिवर्तन नहीं आ रहा है उठा–पटक की राजनीति अधिकारिता। अनाधिकारिता की बात करना एक दूसरे पर चोट करते हुए स्वयं को ही सर्वोपरि घोषित करने की अपनी आदत नहीं छोड़ पा रहे हैं यह कोई अच्छे भविष्य के संकेत नहीं देते। कभी कभी तो ऐसा लगने लगता है कि यह उक्ति .....

हमतो डूबे हैं सनम !
तुमको भी ले डूबेंगे !!

चरितार्थ होती है, यदि हमारे साथी अपनी इस आदत में परिवर्तन नहीं लाते हैं तो उनका क्या होगा ?यह तो वही जाने परन्तु इलेक्ट्रो होम्योपैथी की साख पर बट्टा अवश्य लगवा देंगें।

पिछले 7 वर्षों से यह लगातार देखा जा रहा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी दो धड़ो में बँट गयी है, एक अधिकार प्राप्त दूसरे अधिकारों के लिए संघर्षरत और यही वह कड़ी है जो पीड़ादायक है कल तक सब लोग एक तरह से कार्य कर रहे थे कोई अधिकारी अनाधिकारी नहीं था व्यवस्थायें बदली और संस्थायें अधिकारिता के लिए दौड़ पड़ीं जिनको अधिकार नहीं मिला वे निराश हो गये और न्यायालयों से भी राहत नहीं मिली तो इस कदर आहत हो गये कि एक दूसरे के कार्य के प्रति ही मीनमेख निकालने लगे, जब इससे भी काम नहीं चला तो यह कहने से भी नहीं चूके कि जो संस्थायें अधिकारिता का ढिंढोरा पीट रही हैं उनके पास कोई आधार नहीं है इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबको काम करने का अधिकार है। हद तो तब हो गयी जब एक अनाधिकृत विवादित संगठन की पैरोकारी करते हुए उस संगठन को ही चिकित्सकों का सबसे बड़ा हितैषी साबित करने का प्रयास किया गया। यह कार्य इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए कदाचित लाभकारी नहीं है हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि आज नहीं तो कल सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नियमितीकरण करेगी तब कौन आगे होगा कौन पीछे ? इस चर्चा पर विराम लग जायेगा।

अस्तु हम सब साथियों को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित में ऐसा व्यवहार करना चाहिये जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का दूरगामी हित हो।

बिना ध्यान .... प्रथम पेज से आगे

हमारे पास इस तरह की किसी भी आदेश की पुष्ट जानकारी नहीं है फेसबुक और वाट्सअप जिस तरह की जानकारी प्रदर्शित की जा रही है वह विश्वसनीय नहीं लग रही है। कभी कभी तो हमारे साथी सूचना के अधिकार से प्राप्त जानकारियों को सरकारी आदेश के रूप में प्रस्तुत कर दिया जाता है। और हमारे साथी इससे विचलित हो जाते है जब कि सत्य यह है कि भारत सरकार द्वारा इस तरह की किसी भी कार्यवाही से स्पष्ट इंकार किया जा रहा है। भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग इस तरह की जानकारी देने में स्वयं को सक्षम नहीं पा रहा है परन्तु समाचार तो समाचार है जब फैलता है तो मन में जिज्ञासा जाग्रति होती है कि जो समाचार प्रचारित किया जा रहा है उसकी वास्तविकता क्या है। चिकित्सकों को इस तरह की बातो से भ्रमित नहीं होना चाहिये और पूरी अधिकारिता से अपने काम में लगे रहना चाहिये क्योंकि किसी भी सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने में न तो कोई अड़गा डाला जा रहा है और न ही कोई रोक लगायी जा रही है। जिनसे जानकारी मांगी गयी है वह जानकारी दें हमारे चिकित्सकों को चाहिये कि वे अपने मन में इस बात के लिए पूर्ण रूप से आश्वस्त रहे कि उनके चिकित्सा व्यवसाय में कोई बाधा नहीं है। शान्त मन से कार्य करें। फ़लता भी प्राप्त करनी होगी, हर साथी का योगदान सराहनीय होता है।

गर्मी में गर्मी लाने की .... पेज 2 से आगे

राजनीतिज्ञों ने अपना समर्थन व सहयोग दिया है जिसमें कुछ नाम राष्ट्रीय स्तर के हैं जैसे सत्यप्रकाश मालवीय डा० सी० पी० ठाकुर, रामदास अठावले, देवव्रत विस्वास, विश्वनाथ प्रतापसिंह ये कुछ नाम हैं जिनका सिर्फ़ सहयोग और समर्थन ही मिल पाया परिणाम नहीं इसलिए इस आन्दोलन को राजनीतिक लाभ दिलाने के लिए हमें नये सिरे से सोचना होगा वर्तमान में सांसद रंजीता रंजन जी का सहयोग और समर्थन इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्राप्त हो रहा है परन्तु अब आवश्यकता है कि हम इस सहयोग और समर्थन को परिणाम में परिवर्तित करवायें कारण प्रयास करते करते 70 वर्ष हो गये और स्थिति तैसी की तैसी है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन के सामने ही कुछ और आन्दोलन खड़े हुए उन्हें सफलता मिल गयी और हमारी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया और जो परिवर्तन है उसे हमारे साथी स्वीकार नहीं कर पा रहे है। यदि इस परिवर्तन को स्वीकारा होता और उसी क्षेत्र में कार्य किया होता तो निश्चित रूप से स्थिति आज बहुत भिन्न होती। लेकिन इतना सबकुछ होने के उपरान्त ही हम और हमारे साथी अभी भी अलग अलग धड़ों में बटे हुए है कोई किसी की बात सुनने वाला नहीं है। परिणामतः परिस्थितियों में जो परिवर्तन दिखायी देना चाहिये वह नहीं दिखायी पड़ता इस गर्मी में जो यह आयोजन किये जा रहे है हमारी कामना है कि आयोजन तो सफल हो साथ साथ इन आयोजनों के पीछे जो उद्देश्य है अर्थात इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता प्राप्त हो इस पावन उद्देश्य की पूर्ति की तरफ कुछ कदम तो बढ़े हमें यह पता है कि मान्यता कोई आसान काम नहीं है इसके लिए जिन प्रर्याप्त तर्कों और तथ्यों की आवश्यकता है उसकी कमी नहीं है बस हमें प्रस्तुतीकरण का सुअवसर तलाशना होगा अन्यथा कार्यक्रम ऐसे ही आयोजित होते रहेंगे लोग जुड़ते रहेंगे और आशा निराशा में बदलती रहेगी हमारे नेताओं का दायित्व है कि स्थिति को समझे और आशाओं को जन्म दें।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन में महिलाओं का योगदान कम नहीं

कहा जाता है कि हर सफल व्यक्ति के पीछे महिला का हाथ होता है ठीक इसी तरह से हर आन्दोलन में महिला की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं होती है, यदि हम किसी भी सामाजिक आन्दोलन को देखें और उनका आकलन करें तो यह बात स्पष्ट रूप से नजर आती है कि आदिकाल से लेकर आज तक हर आन्दोलन की सफलता में नारी की अपनी अलग भूमिका होती है। विज्ञान का क्षेत्र हो, साहित्य का क्षेत्र हो, कला का क्षेत्र हो, राजनीति का क्षेत्र हो, या चिकित्सा का क्षेत्र हो, हर क्षेत्र में नारी ने समय–समय पर अपनी योग्यता सिद्ध की है आज़ादी के आन्दोलन में भी महिलाओं ने भी बढ़–चढ़ हिस्सा लिया है और कभी भी अपने आप को पुरूषों से कम नहीं माना है रानी लक्ष्मीबाई हो या रजिया सुल्तान, झलकारी बाई हों या अवन्तीबाई हों इनके शौर्य की गाथा आज भी गायी जाती है मैडम क्यूरी न होतीं तो रेडियम न होता फ्लोरिन्स नाइटिंगल या मदर टेरेसा मानवता की जीती जागती मिसाल हैं ठीक इसी तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में महिलाओं का अपना अलग योगदान है। काउन्ट मैटी के ज़माने से आजतक महिलाओं ने कंधे से कंधा लगाकर इस आन्दोलन को बढ़ाया है स्व0 मोरध्वज सिंह प्रलयंकर जी की पत्नी साथ में प्रैक्टिस करती थी, स्व0 डा0 वी0 बी सिन्हा की पत्नी श्रीमती सुतापा सिन्हा का निरन्तर योगदान रहा है, डा0 एम0 एच0 इदरीसी की धर्मपत्नी डा0 शाहीना इदरीसी पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आज भी उत्साह– वर्धन कर रही हैं। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलनों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने वाली कुछ महिलाओं को हम नहीं भूल सकते इनमें डा0 उर्मिला द्विवेदी का योगदान अविस्मरणीय है। कानपुर के आन्दोलन में पुलिस से संघर्ष लेने में नीलम चतुर्वेदी व अनवर सज्जाद का योगदान इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नेता डा0 नीरन श्रीवास्तव की पत्नी डा0 मीरा श्रीवास्तव का योगदान कहीं से भी कम नहीं है। दिल्ली के धरने में श्रीमती स्वालेहा अरबी, श्रीमती सविता पाण्डेय, श्रीमती शिखा मिश्रा, श्रीमती ममता तिवारी, श्रीमती सुनीता मिश्रा यह कुछ ऐसे नाम हैं इस आन्दोलन में कुछ अलग छाप छोड़ी है। श्रीमती माधुरी प्रधान ने साहित्य के साथ–साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। बदायूँ के डा0 रामेन्द्र पाल इस अवस्था में भी सपत्नी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेवा कर रहे हैं शासन से टक्कर लेने में सादाबाद के इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सक दम्पति डा0 नेम चन्द व श्रीमती नेम चन्द तथा उरई जालौन की डा0 सावित्री पटेल व डा कुलदीप की ऊर्जा को हम नमस्कार करते हैं यह सारे नाम लिखने का तात्पर्य यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में महिलाओं का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत सारी ऐसी महिलाओं ने जिन्होंने परोक्ष रूप से इलेक्ट्रो होम्योपैथी को गति दी है जब–जब पुरूष हताश हुआ है महिलाओं ने ढांढस बंधवाया है।

25 नवम्बर, 2003 के आदेश के बाद जब अधिकांश इलेक्ट्रो होम्योपैथ हताश और निराश था तब हमारी इन बहनों ने आगे बढ़कर अपने पतियों को ऊर्जा दी। *हम उनके हौसले का सलाम करते हैं।*

जिज्ञासुओं के लिए होली का उपहार

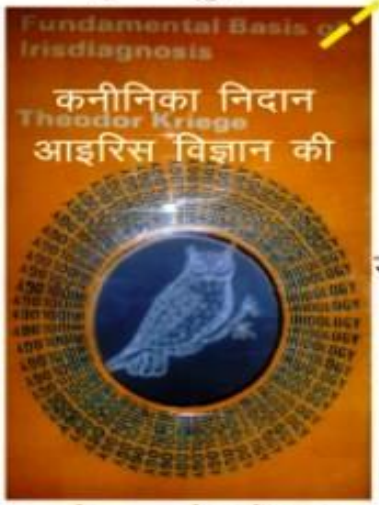

एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page
&
Price ₹40 only
डाक खर्च ₹ 20 अतिरिक्त
आपके लिये अब
ऑनलाइन बुकिंग
की भी सुविधा
अपना नाम, पूरा पता
डाक का पिनकोड

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक गाइडें
- मटेरिया मेडिका ₹ 25
- प्रैक्टिस ऑफ मेडिसिन ₹ 30
- जनस्वास्थ्य विज्ञान ₹ 50
- फार्मेसी ₹ 5
- फिलॉसोफी ₹ 30

पर S.M.S. कर सकते हैं
Conditions applied
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0
127/204 एस जूही, कानपुर–208014
+91 9415074806, 9450153215, 9450791546, 9415486103

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परीक्षायें 28 मार्च से

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR EXAMINATION March 2017

Name of the course	28 th March, 2017 Tuesday		29 th March, 2017 Wednesday		30 th March, 2017 Thursday		31 st March, 2017 Friday
	1st. Meeting	2nd Meeting	1st. Meeting	2nd Meeting	1st. Meeting	2nd Meeting	1st. Meeting
M.B.E.H. 1st. Professional	Anatomy 1st.	Anatomy 2nd.	Physiology 1st.	Physiology 2nd.	Pharmacy	Philosophy	XX
M.B.E.H. 2nd. Professional	Pathology 1 st.	Pathology 2nd.	Hygiene and Health	M. Juris.Prud. & Toxicology	Materia Medica	Pract of Med. 1 st.	Practice of Medicine 2 nd.
M.B.E.H. Final Professional	Midwifery & Gynics. 1st.	Midwifery & Gynics. 2nd.	Opthalmology 1st.	Opthalmology 2nd.	Pract. of Med. 1st.	Pract of Med. 2nd.	Materia Medica
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	XX	Pharmacy & Philosophy	XX		XX	XX
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	XX	Hygiene & Health	XX	Environmental Science	XX	XX
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	XX	M.Jurisprudence & Toxicology	XX	Dietetics	XX	XX
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	XX	Materia Medica	XX	Practice of Medicine	XX	XX
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	XX	Pharmacy-Philosophy & Materia Medica	XX	Pathology-Hygiene & Health-M.Jrisprudence &Toxicology	XX	Midwifery-Gynics Opthalmology encl. E.N.T. & Practice of Med.

Timing < 1st. Meeting : 8:00 A.M.to 11:00 A.M.
2nd. Meeting : 2:00 P.M. to 5:00 P.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge